Bodhi-Path Year 2019 July Issue Volume 17 Page No 42-46

शान्ति, अहिंसा एवं सद्भावनाः बौद्ध धर्म के परिपेक्ष में

Anju Bala

तथागत बुद्ध ने एक जन्म के प्रयत्नों से बुद्धत्व (enlightenment) नहीं पाया था, उन्होनें असंख्य जन्मों तक बुद्धत्व प्राप्त के लिए भगीरथ- प्रयत्न (hardest-efforts) किए थे। जिस समय वे अपने पूर्व जन्मों में सद्गुणों का विकास और सत्कर्मों का आचरण कर रहे थे, तब उन्हे "बोधिसत्त्व" कहा गया, और बोधि का अर्थ हैं बुद्धत्व/ज्ञान तथा सत्त्व का अर्थ है प्राणी ।

इस प्रकार बोधिसत्त्व का अर्थ है बुद्धत्व प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने वाला प्राणी। चाहे वो मनुष्य हो या पशु-पक्षी। बोधिसत्त्व को भावी बुद्ध भी कह सकते हैं।

बुद्ध के जीवन में सैकड़ों बार ऐसे अवसर आये, जब किसी घटना को देखकर उन्हें पूर्वजन्म की घटना स्मरण हो जाती थी और वे उसे सुनाकर वर्तमान के साथ अतीत का मेल बैठा देते- इस प्रकार एक जन्मकथा यानि जातक-कथा हो जाती। लगभग ऐसी 547 जातक-कथाएँ 'पालि' में आज भी उपलब्ध हैं। ये सभी नीतिपरक, नैतिक और रोचक-कथाएँ आध्यात्मिक उपदेशों की श्रेष्ठ उदाहरण हैं ।

इन्हीं बौद्ध-कथाओं से कथानक लेकर कवि आर्यशूर ने संस्कृत भाषा में जातकमाला नामक ग्रन्थ की रचना की। जिसमें 34 जातक-कथाओं द्वारा बोधिसत्त्व के उन उदार कर्मों का वर्णन हैं जो मानव-जाति के लिए आदर्शरूप हैं और इन कथाओ में हृदय को मृदु व उदार बनाने वाले तत्त्वों की प्रमुखता है। इन सभी कथाओं के प्रधानपात्र बोधिसत्त्व हैं। वे भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेते हैं- कभी देव योनि में, कभी मनुष्य योनि में और कभी पशु-पक्षियों की योनि में। वे बचपन से ही उदार, करुणावान और होनहार होते हैं। कवि उनके जन्म का, जीवन का उद्देश्य बताते हुए कहते हैं-

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम् ।

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

यानि मैं न राज्य चाहता हूँ, न स्वर्ग, न ही मोक्ष । मैं केवल दुःखी प्राणियों के दुःख को दूर करना चाहता हूँ।

यह शोधपत्र इस बात को स्पष्ट करने का एक विनम्र प्रयास है कि 'बुद्ध' से (पूर्व) असंख्येय वर्ष पूर्व ही शान्ति, अंहिसा, करुणा एवं सद्भाव के मार्ग का सूत्रपात हो चुका था। बोधिसत्त्व के कुछ अलौकिक दृष्टान्तों (उदाहरणों) को यहाँ प्रस्तुत किया जाएगा, जिनसे यह बात सिद्ध होगी कि बोधिसत्त्वचर्या के दौरान उनका उद्देश्य सबके दुख का निवारण एवं शान्ति का प्रचार प्रसार ही था।

इसी क्रम में (शाक्य कुल में) राजकुमार सिद्धार्थ ने लुम्बिनी (नेपाल) में जन्म लिया और यही बोधिसत्त्व के पूर्व-जन्मों की पराकाष्ठा थी जिसमें बुद्धत्व प्राप्त कर वे 'तथागत बुद्ध ' कहलाए ।

सर्वप्रथम व्याघ्री जातक के अनुसार ये बोधिसत्त्व (जो बाद में आगे चलकर भगवान् बुद्ध हुए), पवित्र चित्त वाले महान ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए।

बोधिसत्त्वः किलायं भगवान्भूतः शुचिवृत्तिः महति ब्राह्मणकुले जन्मपरिग्रहं चकार। जा.मा.-1/5 से पूर्व

उन्होंने विद्यार्जन किया और प्रव्रजित हो गए। एक समय महात्मा बोधिसत्त्व अपने शिष्य के साथ पर्वत-कन्दराओं में घूम रहे थे, तब उन्होनें एक ऐसी सुस्त और कमजोर शेरनी को देखा जिसने सिंह-शावकों को जन्म दिया था और वे शिशु मातृ-विश्वास से निर्भय होकर उसके समीप ही बैठे थे। उन शिशुओं पर क्रूरता से बार-बार गर्जती हुई वह शेरनी उन्हें आहार के तौर पर देख रही थी।

यह दृश्य देखकर धैर्यवान, करुणावान बोधिसत्त्व भी विचलित हो गए और दुख से काँपने लगे। तब उन्होनें शिष्य को बहाने से दूर भेजकर सोचा -

इस सम्पूर्ण नाशवान शरीर के द्वारा मैं बाघिन को पुत्रवध के पाप से बचाऊँगा और बाघिन के बच्चों को बाघिन से।

तस्मात्करिष्यामि शरीरकेण तटप्रपातोद्गजीवितेन ।

संरक्षणं पुत्रवधाच्च मृग्या मृग्याः सकाशाच्च तदात्मजानाम् ।। जा.मा.-1/25

सर्वप्रकारं जगतो हितानि कुर्यामजस्रं सुखसंहितानि। जा.मा.-1/32

अन्त में जीवों के दुःख दूर करके उन्हें सुख पहुँचाने के लिए बोधिसत्त्व ने अपना शरीर त्याग दिया।

उन्होंने बाघिन को पुत्रों की नृशंस हत्या के पाप से ही नहीं बचाया बल्कि सिहं शावकों को बाघिन से भी बचाया।

बोधिसत्त्व के इस दिव्य कर्म के पठन-मनन से निश्चित ही हमें सकरात्मक दृष्टिकोण प्राप्त होता है कि भले ही भूखी बाघिन के लिए शरीर का त्याग करने का उत्साह हममें नहीं होगा किन्तु किसी भूखे प्राणी को भोजन प्रदान कर, उसका दुःख अवश्य कम कर (सकते हैं) सकेगें। वास्तव में हमें परोपकारी बनना चाहिए।

बोधिसत्त्व का यह उदात्त कृत्य समस्त मानव जाति के समक्ष एक उज्ज्वल उदाहरण है, ऐसा आदर्श है जिस पर चलकर हम समाज, देश और विश्व में शान्ति व अहिंसा कायम कर सकते हैं। इस साहित्य का यही संदेश है कि करुणा के द्वारा ही उतम स्वभाव का निर्माण होता है और बिना कारण (स्वार्थ) दूसरों पर अनुग्रह करने की प्रवृति होती है।

एक अन्य जातक ‘सुपारग जातक’ की कथा अत्यंत लोकप्रिय है जिसमें बोधिसत्त्व ने अत्यन्त निपुण नौसारथी (नाविक) के रुप में जन्म लिया। वे जिस नगर में रहते थे, उसका नाम भी सुपारग पड़ गया।

सुपारग अर्थात 'य़ात्रा में सिद्धि प्राप्त कराने वाला'।

बोधिसत्त्वभूतः किल महासत्वः परमानिपुणमतिनौरथिर्बभूव। तस्य परमसिद्धियात्रात्वात्सुपारग इति नाम बभूव। जा.मा.-14/1 से पूर्व

उनके वृद्ध हो जाने पर भी यात्री गण चाहते कि वे (महापुरुष कि भाँति) उनके जहाज पर उनके साथ चलें।

एक बार जब बोधिसत्त्व नाविकजनों के साथ जहाज में य़ात्रा पर निकले तो महासमुद्र के मध्य उन्होंने जलधारा की उठी हुई ऊँची- ऊँची तरंगों को देखा जिससे सभी य़ात्री भयभीत हो गए।

उस समय बोधिसत्त्व सुपारग ने उनके चित को शान्त करने वाला उपदेश दिया और बडवानल नामक इस विपत्ति को दूर करने के लिए अपने पुण्य-प्रताप का सहारा लिया-

नाभिजानामि संचिन्त्य प्राणिनं हिंसितुं क्वचित्।।

अनेन सत्यवाक्येन मम पुण्यबलेन च।

बडवामुखमप्राप्य स्वस्ति नौर्विनिवर्तताम्।। जा.मा.-14/30-31

इस सत्यक्रिया के प्रभाव से उनका जहाज बड़वामुख नामक संकट में बिना प्रवेश किए ही वापस लौट आया। यहाँ बोधिसत्व के धर्माश्रित सत्यवचनों ने अनेक यात्रियों का दुख दूर किया। इस प्रकार अपने सत्य व अहिंसा के बल से उन्होंने संकटापन्न जहाज की रक्षा की तथा अपने धर्म की रक्षा की।

ऐसा ही प्रसंग मत्स्य जातक में मिलता है जहाँ मछली के रूप में जन्में बोधिसत्व सूखे सरोवर में छटपटाते हुए अपने बन्धुबाधवों को देखते हैं और जब उनका हृदय करुणा से द्रवीभूत हो जाता है तब अपनी पुण्यराशि और सत्य के प्रताप से वे सबकी रक्षा करते हैं ।

स्मरामि न प्राणीवधं यथाहं, संचिन्त्य कृच्छ्रे परमेडपि कर्तुम्।

अनेन सत्येन सरांसि, तोयैरापूरयन्वर्षतु देवराजः ।। जा.मा.-15/8

वस्तुतः इन प्रेरक व रोचक कथाओं का उद्देश्य 'धर्माचरण' ही श्रेष्ठ कर्म है- यही बताता है।

ये कथाएँ हमें मानव जीवन पाकर सत्कर्म करने की प्रेरणा देती हैं तथा शिक्षा देती हैं कि यदि जीवन में पुण्य अर्जन करने का मौका कभी भी मिले तो उसे व्यर्थ में गंवाना नहीं चाहिए।

बोधिसत्व की क्षमाशीलता का चरमोत्कर्ष हमें चुड्डबोधि-जातक में देखने को मौका मिलता है। जिसके अनुसार धर्मशील निर्मल बुद्धि वाले बोधिसत्व महान् ब्राह्मण वंश में पैदा हुए।

बोधिसत्वः किल महासत्वः कस्मिंश्चित् महति ब्राह्मणकुले जन्मे प्रतिलेभे । जा.मा.-21/1से पूर्व

बोधिसत्व चुड्डबोधि ने कामसुख त्यागकर गेरुआ वस्त्र धारण किए और उनकी पत्नी ने भी प्रव्रज्या (संन्यास) ग्रहण कर ली। वे दोनों जिस वन में निवास करते थे वहाँ वसन्तकाल में भ्रमणार्थ पहुँचे।

राजा ने बोधिसत्व की सुंदर पत्नी का मोहवश अपहरण किया । इस पर बोधिसत्व ने क्रोध का दमन किया और शान्त रहे। आश्चर्यचकित राजा के पूछने पर उन्होंने क्रोध के दोषों का विस्तारपूर्वक वर्णन (लगभग 13 श्लोकों में) किया।

जिस प्रकार रगड़े जाते हुए काष्ठ से निकली अग्नि उसी को जला देती है। उसी प्रकार मनुष्य की मिथ्या धारणाओं से उत्पन्न क्रोध उस मनुष्य को नष्ट कर देता है।

काष्ठाद्यथाग्निः परिमथ्यमाना

दुदेति तस्यैव पराभवाय।

मिथ्या-विकल्पैः समुदीर्यमाण-

स्तथा नरस्यात्मवधाय रोषः ।। जा.मा.-21/26

इस प्रकार प्रव्राजक की शान्तिदायक मनोहर वाणी से द्रवित राजा उनके चरणों में गिरकर क्षमा-

प्रार्थना करता है। उनकी पत्नी को लौटाकर स्वयं सेवक-भाव से उनके साथ रहता है।

इस जातक कथा का यही संदेश है कि व्यक्ति को क्रोध का दमन करना चाहिए। इस प्रकार अवैर से ही वैर शान्त होता है। वस्तुतः हिंसा का मूल रूप क्रोध ही है।

इसी प्रकार जातकमाला की प्रत्येक कथा में नीति एवं मानवीय मूल निहित हैं। यहाँ कुछ ही उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। स्थालीपुलाकन्याय से शेष ग्रहणीय हैं।

आज के इस मशीनी युग में जहाँ हर कोई असंतोष, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और भय से लड़ रहा है| मानव ही मानव का शत्रु बन रहा है। ऐसी भयावह स्थिति में माता-पिता, शिक्षकों एवं गुरुओं का क्या कर्तव्य है?

मेरा मानना है कि इस स्थिति में बौद्-साहित्य की अद्भुत ये कथायें ही महौषधि की अमूल्य मन्जूषा है। इनके पठन-पाठन से एक अलौकिक रस की अनुभूति होती है। इनमें सदाचार और नैतिकता के मूल तत्व

अनुस्यूत हैं। सर्वत्र मान्यता है कि 'यथा कर्म तथा फल'- अर्थात् हम जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल हमें मिलता है। नीतिपरक उपदेशात्मक जातक- कथाएँ ऐसा ही विश्वास अवश्य जाग्रत करती हैं।

आनन्द कौसल्यायन जातक के महत्व को बताते हुए कहते हैं- ये कथाएँ मनोरंजन के साथ उपदेश ग्रहण में, हृदय को उदार और शुद् बनाने के साथ बुद्धि को प्रखर करने मे सबसे बड़ा साहित्य है।

वस्तुतः जातक कथाओं का संग्रह बहुमूल्य स्रोत है जो शान्ति व अहिंसा कायम करने में सक्षम है। वस्तुतः इनका धार्मिक व नैतिक शिक्षण अमूल्य है।

सद्धर्म-पुण्डरीक के अनुसार-

सूत्राणि भाषामि तदैव गाथा

इतिवृतकं जातकमदभुतञ्च ।

निदान औपम्यशतैश्च चित्रै

गेंयञ्च भाषामि तथोपदेशान् ।। 2.45

अर्थात् तथागत ने सूत्र, गाथाओं और जातक-कथाओं के द्वारा अपना उपदेश बाल बोध कराया|

इत्सिंग ताकाकुसु (इत्सिंग के प्रवास पृष्ठ 163) ने भी इसका समर्थन किया है-

वस्तुतः जनसामान्य तथा विद्ज्जनों को प्राणीमात्र के मोक्षतत्त्वों का सुन्दर और बालबोध रीति से परिचय कराना ही इन जातक-कथाओं के निर्माण का उद्देश्य है|

अन्त मे मैं यही कहूंगी कि इन कथाओं के मूल उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमें ठोस कदम उठाने होंगे|

मानवता और नैतिकता के संदेशवाहक इस साहित्य को विश्व के भावी कर्णधारों तक पहुँचाना होगा,

तभी सर्वत्र शान्ति, अहिंसा एवं सद्भभावना कायम होगी|

डॉ. अञ्जुबाला

एम. फिल., पीएच.डी

बौद्ध (विद्या) अध्ययन विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय